गल्प
गल्प
फाँसं
आज

नारी
मु

२
कल
रूपर

मुद्रक
श्रीप्रवासीलाल वर्मा मालवीय
सरस्वती-प्रेस, बनारस सिटी।
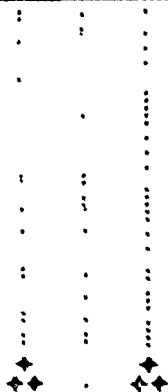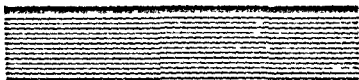
प्रेम की वेदी

नहीं मिलती। आप बरबस उनके पीछे पड़ी हुई है।

मिसेज़ गार्डन—तुम तो बेटी, कभी-कभी ऐसी बातें करने लगती हो, जैसे घर का हाल कुछ जानती ही न हो। विलियम में क्या बुराई है, ज़रा सुनूँ? या यह भी कोई ज़िद है कि मेरी तबीयत उससे नहीं मिलती। अच्छा खासा जवान है, शक्ल-सूरत भी बुरी नहीं, बड़ा ही हँस-मुख, बड़ा नेक चलन, बड़ा चरित्रवान, न शराब से मतलब, न किसी और शौक से, और तुझे कैसा आदमी चाहिये? चार पैसे कमाता है, घर में भी कुछ जायदाद है, और आदमी में क्या चाहिये। फ़ैशनेबल नहीं है, यही ऐब है। मगर तू इसे ऐब समझ, मैं तो हुनर समझती हूँ, मैं सच कहती हूँ, बूढ़ी न होती, तो उससे ज़रूर शादी कर लेती। तुम्हारे पापा को गुज़रे आज पाँचवां साल है। हाथ में जो कुछ था वह सब निकल गया। अब काम कैसे चले? माना अब तू ग्रेजुएट हो गई, लेकिन ऐसी कौन-सी बड़ी नौकरी तुझे मिली जाती है। ज़्यादा-से ज़्यादा सौ की। तेरे पापा पाँच सौ लाते थे तब गुज़र होता था, और चार पैसे

पे जाने में जरा देर हो गई, तो औरत के सिर आफत आ गई। अगर वह बगैर मर्द से पूछे कहीं चली गई, तो मर्द उसके खून का प्यासा हो गया। अगर किसी मर्द से हँसकर बोली, तो फिर समझ लो कि उसकी कुशल नहीं। दिखाने को तो मर्द स्त्री की बड़ी इज्जत करता है, मोटर पर अच्छी जगह स्त्री की है, सलाम पहले मर्द करता है, स्त्री का ओवरकोट पुरुष सँभालता है, स्त्री का हाथ पकड़ कर गाड़ी से उतारता है, पहले स्त्री को बिठा कर आप बैठता है, लेकिन यह सब दिखावे का शिष्टाचार है। पुरुष दिल में खूब समझता है, कि उसने स्त्री की वह चीज छीन ली जिसकी पूर्ति में वह जितनी खातिरदारी करे वह थोड़ी है। वह चीज स्त्री की आजादी है।

मिसेज गार्डन—तेरे विचार बड़े विचित्र हैं जेनी!

जेन — विचित्र नहीं यथार्थ है। हम अपने कुत्तों की कितनी खातिर करते हैं। उसे गोदी पर साथ बैठाते हैं, गोद में उठाते हैं, उसका मुँह चूमते हैं, गले में लगाते हैं, उसे साबुन से नहलाते हैं, लेकिन क्या बराबर हमारे मन

ही देख सकता।

ोहनबनी। माँग का सिंदूर और माल-
कि वह विवाहिता है। उनकी गोल
न है, गले में जड़ाऊ हार, मूल्यवान
ने हुए, हँसता प्रसन्न वदन, मानो
ही-वल्लरी, फूली-फली है।)

सी पर बैठे-बैठे) मैं पहले कुरसी
सत्कार करती थी; लेकिन
इसलिये कि तुम मेरी निगाह
जो पहले थीं।
? क्या मैं कुछ और हो गई हूँ?
क! पहले तुम स्वतंत्र कुमारी
एक पुरुष की दासी हो।
ठहरकर) लेकिन तुम्हारी सहेली
साथ पढ़ी तो हूँ, तुम्हारे साथ
दि मैं अपने पद से गिर गई
मेरा और सत्कार करना
मुझे दुःख न हो।
गर तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति
ईश्वर न करे—तो मैं तुम्हारे

पैरों-तले आँखें बिछाती ; लेकिन तुमने जान-बूझकर अपने पैरों में बेड़ियाँ डाली हैं, अपनी स्वाधीनता को, अपनी आत्मा को, सोने और रेशम पर बेचा है ।

उमा—(हँसकर) अच्छा ईमान से कहना, मैं पहले से ज्यादा खूबसूरत नहीं मालूम हो रही हूँ ?

जेनी—अपने स्वामी की आंखों में मालूम होती होगी । मेरी आँखों में तो तुम्हारा रूप-लावण्य इस सोने और रेशम के नीचे दबा-सा मालूम होता है ।

उमा—देखो यह कंगन, कितना बारीक काम है !

जेनी—(मुह फेरकर) गुलामो की हथकड़ी है ।

उमा—यह हार देखो, हीरे जड़े हैं ।

जेनी—गुलामी का तौक है ।

उमा—(कुछ चिढ़कर) जिसे तुम गुलामी को हथकड़ी और गुलामी का तौक कहती हो, उसे मै व्रत और कर्तव्य और आत्म-समर्पण का चिन्ह समझती हूँ ।

जेनी—वह व्रत, वह कर्तव्य और वह आत्म-समर्पण एक तरफो क्यो है ? तुम्हारे ही

लिए क्यो इन चिन्हो की जरूरत है ? तुम्हारे पति के लिये क्यो जरूरी नही ? जहाँ तक मेरा अनुभव है, उसके हाथ में न चूड़ियाँ हैं, न कंगन है, न गले में हार है, न माथे पर ।सिंदूर का टीका है। यह क्यों ? तुम्हे अपने व्रत पर स्थिर रखने के लिये बंधन चाहिए, उसे बंधन की जरूरत नहा ?

(उमा निरुत्तर हो जाती है और उपालंभ की दृष्टि से मिसेज गार्डन की ओर देखती है।)

उमा—सुनती है मामा आप इनकी बाते ?

मिसेज गार्डन—मै इसे कुबुद्धि कहती हूँ। निरी मूर्खता।

जेनी—(विजय-भाव से) जवाब दो न। क्यों तुम्हारे पति ने इन बंधनों को स्वीकार नहीं किया ? क्यो तुम्हारे लिये इन बंधनों को लाज़िम समझा गया ? कर्तव्य और प्रेम उसके लिये भी उतना ही आवश्यक है जितना तुम्हारे लिये। तुम्हे अपने कर्तव्य की याद दिलाते रहने के लिये निशानियों की जरूरत है, उसे क्यों नही ? इसका कारण इसके सिवा और क्या हो सकता है, कि तुम गुलाम हो, वह आज़ाद है।

पैरों-तले आँखें बिछाती ; लेकिन तुमने जान-बूझकर अपने पैरों में वेड़ियाँ डालीं हैं, अपनी स्वाधीनता को, अपनी आत्मा को, सोने और रेशम पर वेचा है ।

उमा—(हँसकर) अच्छा ईमान से कहना, मैं पहले से ज्यादा खूबसूरत नहीं मालूम हो रही हूँ ?

जेनी—अपने स्वामी की आँखों में मालूम होती होगी । मेरी आँखों में तो तुम्हारा रूप-लावण्य इस सोने और रेशम के नीचे दबा-सा मालूम होता है ।

उमा—देखो यह कंगन, कितना वारीक काम है !

जेनी—(मुह फेरकर) गुलामी की हथकड़ी है ।

उमा—यह हार देखो, हीरे जड़े हैं ।

जेनी—गुलामी का तौक है ।

उमा—(कुछ चिढ़कर) जिसे तुम गुलामी की हथकड़ी और गुलामी का तौक कहती हो, उसे मैं व्रत और कर्तव्य और आत्म-समर्पण का चिन्ह समझती हूँ ।

जेनी—वह व्रत, वह कर्तव्य और वह आत्म-समर्पण एक तरफी क्यों है ? तुम्हारे ही

लिए क्यों इन चिन्हों की जरूरत है ? तुम्हारे पति के लिये क्यों जरूरी नहीं ? जहाँ तक मेरा अनुभव है, उसके हाथ में न चूड़ियाँ है, न कंगन है, न गले में हार है, न माथे पर सिंदूर का टीका है। यह क्यो ? तुम्हे अपने व्रत पर स्थिर रखने के लिये बंधन चाहिए, उसे बंधन की जरूरत नहीं ?

(उमा निरुत्तर हो जाती है और उपालम्भ की दृष्टि से मिसेज गार्डन की ओर देखती है।)

उमा—सुनती है मामा आप इनकी बाते ?

मिसेज गार्डन—मै इसे कुबुद्धि कहती हूँ। निरी मूर्खता।

जेनी—(विरुद्ध-भाव से) जवाब दो न। क्यों तुम्हारे पति ने इन बंधनो को स्वीकार नहीं किया ? क्यो तुम्हारे लिये इन बंधनो को लाजिम समझा गया ? कर्तव्य और प्रेम उसके लिये भी उतना ही आवश्यक है जितना तुम्हारे लिये। तुम्हें अपने कर्तव्य की याद दिलाते रहने के लिये निशानियो की जरूरत है उसे क्यो नहीं ? इसका कारण इसके सिवा और क्या हो सकता है कि तुम गुलाम हो वह आजाद है।

तो लड़की को ले भागते और उसके साथ घर में जो चल सम्पत्ति मिल जाती, उसे भी उठा ले जाते। लड़कीवाले रो-पीट कर रह जाते थे। कन्या विजेताओं के घर में कैद कर दी जाती थी। उसके हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी जाती थीं, पैरों में बेड़ियाँ, गले में तौक और उस संग्राम के स्मृति स्वरूप उसके माथे पर रक्त का टीका लगा दिया जाता होगा, जिसमें कन्या समझती रहे कि यदि उसने कभी भागने का प्रयत्न किया, तो उसकी भी वही दशा होगी जो उसके घर वालों की हुई है। कन्या को कभी घर वालों की याद न आए, वह इन नए स्वामियों को ही अपना सर्वस्व समझने लगे, इसलिये कन्या को उपदेश दिया जाता था कि पति ही तेरा स्वामी है तेरा देवता है उसे प्रसन्न रखकर ही तू स्वर्ग में जायगी। यह है इन निशानियों का तथ्य। आज इन पाशविक प्रथाओं का रूप कुछ बदल गया है अवश्य किन्तु मूलाधार वही है। न वह सम्बन्ध न कुछ नया रूप वही है, लेकिन पुरुषों की मनोवृत्ति अब भी वही है और समाज-व्यवस्था का आधार भी वही है। दिन कुछ न बदला।

मिसेज गार्डन—यह तुम्हारे मस्तिष्क की उपज है ; या तुमने कहीं पढ़ा है ?

जेनी—यह एक बड़े फ्रांसीसी तत्ववेत्ता के विचार हैं।

मिसेज गार्डन—तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई होगी। स्त्री-पुरुष दोनों अपनी रुचि के अनुसार अपना-अपना बनाव-सिंगार करते हैं। स्त्री पुरुष को आकर्षित करना चाहती है, पुरुष स्त्री को। पुरुष में पशुबल अधिक है, स्त्री मे बुद्धिबल अधिक है ; इसलिये बाहर की कड़ी मेहनत-मजूरी, लड़ाई-दंगा मर्द के हिस्से पड़ा, भीतर का काम औरत के हिस्से आया। मैंने तो बड़े-बड़े राजाओं को हीरों के हार और मोतियों के कंगन पहने देखा है। फिर देस देस का रिवाज अलग-अलग है। भूटान मे तो स्त्री-पुरुष एक से होते हैं, पता ही नहीं चलता कौन स्त्री है, कौन पुरुष। मजदूर औरतें भी बहुत कम गहने पहनती हैं। योरप मे साधारणतः स्त्रियाँ गहने पहनती ही नहीं हैं। केवल ऊँचे कुलवाली महिलाएँ दो-एक चीज़ पहन लेती हैं। भारत में पोर-पोर गहनों से लदा होता है। अपने-अपने देस की प्रथा है।

हैं, तो ऐसी दगाबाज औरतें भी कम नहीं हैं। हो सकता है, मरदों की संख्या अधिक हो, लेकिन इसका कारण यह नहीं है कि औरत स्वभावतः विदुषी होती है; बल्कि उसे प्रकृति ने जकड़ रक्खा है। मैं तो मोटी बात यह जानती हूँ कि जो स्त्री-पुरुष सुख-शांति से जिन्दगी बसर करना चाहते हैं, वह जानते हैं कि पूर्ण विश्वास और प्रेम से ही यह सिद्धि हाथ आ सकती है। जो स्त्री-पुरुष वासना-तृप्ति के उपासक हैं, वह दोनों रोकर और झींक कर जिंदगी के दिन काटते हैं।

जेनी—आप तो मामा आज मरदों की वकालत करने पर तुली हुई हैं। आप का यही निर्णय है कि पुरुष स्त्री को अपने बराबर समझता है और उस पर किसी तरह का दबाव नहीं डालता?

मिसेज़ गार्डन—हाँ, जो पुरुष जीवन का सच्चा अर्थ समझता है, उसका यही व्यवहार होता है। सुशिक्षित जोड़ों में इसका विचार ही नहीं आने पाता कि कौन छोटा है, कौन बड़ा। स्त्री से कोई भूल हुई, पुरुष ने डाटा। पुरुष से कोई गलती हुई, स्त्री ने गरदन नापी। दोनों हर हालत में संतुष्ट रहते हैं। मैं यह नहीं

कहती कि ऐसा पुरुष सच्चा साधु हो जाता है और उसका मन किसी स्त्री पर चचल नहीं होता, अथवा हरेक विवाहिता स्त्री देवी होती है ; लेकिन उन्हे अपने ऊपर निग्रह करना होता है, और कभी-कभी गुप्त प्रेम की आँच में जलकर मरजाना होता है। यदि मुझे अपने पति से अधिक रूपवान पुरुष को देखकर दिल पर हाथ रखने का अधिकार है, तो मेरे पति को भी मुझसे अधिक रूपवती स्त्री को देख कर यह अधिकार समान रूप से प्राप्त है, लेकिन हम दोनों समझते हैं कि इस विश्वासघात से हमारे सुख शांति मे अवश्य बाधा पड़ेगी। इसलिये जब्त करते हैं। कुलीन और विचारशील स्त्री पुरुषों में तो यह भावना आने ही नही पाती।

उमा—(प्रसन्न होकर) अब कहो, जेनी मामा ने तुम्हारी जबान बन्द कर दी या नहीं ?

जेनी—वाह ! इन पुराने विचारों से मेरी जबान बन्द हो जाती तो अबतक मेरी शादी विलियम से हो गई होती। मेरा तो विचार है जिन स्त्रियों में कोई व्यक्तित्व नहीं है वे ही

उमा—आप अपने मित्रों की जिस चंचलता से डरते हैं, क्या आप उससे मुस्तसना है ?

योगराज—था तो नहीं ; लेकिन तुमने कर दिया। (मुस्किराता है)

उमा—मेरी यह बहन कहती हैं, स्त्री विवाह करके पुरुष की गुलाम हो जाती है। क्या तुम मुझे अपना गुलाम समझते हो ?

जेनी—(मैत्कर) यह इस बहस का अवसर नहीं है उमा, आप हमारे मेहमान हैं। हमें आप का कुछ स्वागत करने दो। आप के लिये चाय बनाऊँ ?

(वह योगराज को सिर से पाँव तक अनुरक्त नेत्रों से देख कर आँखें झुका लेती है।)

योगराज—जी नहीं, मैं चाय पी चुका हूँ आप कष्ट न करें।

जेनी—उमा शायद डर रही है कि मैं चाय में कोई जादू कर दूँगी।

योगराज—मैं तो चाहता हूँ आप मुझ पर जादू करें। उमा ने मुझ पर जो वशीकरण डाल रक्खा है उससे कुछ छुटकारा तो मिले।

जेनी—आप हैं बड़े भाग्यवान कि उमा जैसी स्त्री पाई।

योगराज—मैंने उस जन्म मे कोई बड़ी तपस्या की थी।

उमा—तुम दोनों मिलकर मुझे बनाओगे तो मैं चली जाऊँगी।

(जेनी की आँखें फिर योगराज से मिलती हैं। वह आँखें झुकालेता है। उमा जेनी को तीव्र नेत्रों से देखती है।)

योगराज—(प्यानो देखकर) अच्छा, आपको प्यानो का भी शौक है? फिर तो मेरा जी चाहता है, यहाँ कुछ देर बैठकर संगीत का आनन्द उठाऊँ। क्यों मिस गार्डन, आप हमें निराश तो न करेंगी?

जेनी—आप तो तकल्लुफ की बातें करते है बाबूजी, आइए जो कुछ कहिए सुनाऊँ।

(दोनों प्यानो वाली कोठरी में जाते हैं।)

उमा—(अधीर होकर) भाई गाना-बाना सुनाने लगोगी, तो देर होगी। मैंने अम्मा से कहा भी नहीं और चली आई। वह मुझपर नाराज़ होने लगेगी।

जेनी—(मुसकिरा कर) तो तुम जाओ न। बाबूजी मेरी एक चीज सुनकर जायँगे।

उमा—(सिसिया कर) मुझे ड्राइव करना नहीं आता।

जेनी—तो जरो देर बैठ जाओ ना, अम्माँ मार न डालेगी।

योगराज—नहीं मिस गार्डन, इस वक्त क्षमा कीजिए। यह दोष मुझ पर आजायगा। फिर कभी।

(वह जेनी और मिसेज गार्डन से हाथ मिलाता है। उमा भी दोनों से हाथ मिलाती है।)

जेनी—कल आना उमा, और बाबूजी को लाना।

(उमा कोई जवाब नहीं देती। दोनों चले जाते हैं।)

मिसेज गार्डन—बड़ा सुशील लड़का है।

जेनी—एक यह आदमी है, एक आप का विलियम। सूरत से उजड्डपन बरसता है। चेहरे पर सौम्यता की परछाईं तक नहीं।

मिसेज गार्डन—बेटी सभी आदमी एक-से नहीं होते। यह लोग कुलीन हैं। विलियम का बाप [illegible]-गार्ड था। हाँ उसने बेटे को अच्छी [illegible] दिलाई।

[illegible]—और आप चाहती हैं कि मैं उस गँवार से विवाह कर लूँ।

मिसेज़ गार्डन—मेरे पास भी दस हज़ार देने को होते, तो मैं भी कोई ऐसा ही वर खोजती। जितना गुड़ डालोगी, उतना ही मीठा तो होगा।

जेनी—इसीलिये तो मैंने निश्चय कर लिया है, विवाह न करूँगी। तुम ने देखा मामा, उमा कितनी जली जाती थी।

मिसेज़ गार्डन—अभी नई मुहब्बत है न।

जेनी—देख लेना, इन दोनों में बहुत दिन पटेगी नहीं। उमा अल्हड़ छोकरी है। योगराज रसिया है। महीने-दो-महीने में वह उसकी तरफ़ से ऊब उठेगा।

मिसेज़ गार्डन—नहीं जेनी, देख लेना दोनों जीवन-पर्यन्त सुखी रहेंगे।

जेनी—मैं तो कभी पसन्द न करूँ कि कोई मेरे गले में रस्सी डाले फिराया करे।

(मिसेज़ गार्डन चली जाती हैं। जेनी प्यानो पर बैठकर गाने लगती है—कभी हम से तुम से भी प्यार था।)

[परदा]

दूसरा दृश्य

(वही मकान, अन्दर का बावरचीखाना। विलियम एक बेंत के मोढ़े पर बावरचीखाने के द्वार पर बैठा हुआ है। मिसेज गार्डन पतीली में कुछ पका रही है। विलियम बड़ा भीमकाय, गठीला, पक्के रंग का आदमी है, बड़ी-बड़ी मूँछें, चौड़ी छाती फौजी जवान-सा मालूम होता है।)

मिसेज गार्डन—तुमने कभी प्रोपोज भी किया या यों ही समझ लिया, कि वह इंकार कर देगी ?

विलियम—मेरी हिम्मत ही जवाब दे देती

है। औरत के [illegible] है, इसका अनुभव मुझे आज हुआ।

मिसेज गार्डन—[illegible] तुम [illegible] और [illegible] आ [illegible]।

विलियम—इसकी तो मुझे चिन्ता नहीं है मिसेज गार्डन, उसको और अपना मन एक कर दूँगा। मैं चाहे डेजी को न पा सकूँ, पर कोई दूसरा भी उसे मेरे जीते-जी नहीं पा सकता।

मिसेज गार्डन—फिर वही उल्लूपन की बात! अरे तू प्रोपोज क्यों नहीं करता भाई?

विलियम—कैसे प्रोपोज करूँ, यही तो मुझे नहीं आता। कई किताबें देखीं, मगर कुछ साफ न हुआ।

मिसेज गार्डन—उसे कभी पार्क-वार्क में ले जाओ और वहाँ एकान्त में प्रोपोज करो। और मैं क्या बताऊँ?

विलियम—वह जब मेरे साथ कहीं जाय भी। मुझे देखते ही तो उसके चेहरे पर उदासी छा जाती है। चाहती है, मैं उठकर चला

जाऊँ। कभी खातिर से बैठाए। कुछ बात-चीत करे, तब तो मेरा दिल बढ़े।

मिसेज गार्डन—तो क्या तुम साल-भर से यो ही रस्ता नापने आते हो?

विलियम—मेरी पहुँच तो आप ही तक है।

मिसेज गार्डन—तो क्या मुझसे शादी करेगा? कैसा युवक है! होशियार मर्द एक घंटे में औरत को रास कर लेता है, तुम्हे साल-भर दौड़ते हो गया और अभी क, ख, की नौबत भी नहीं आई। कुछ तुम में बूता हो, तो मैं भी जोर लगाऊँ। बछड़ा तो खूँटे ही के बल पर कूदेगा। आखिर तुमने उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिये अब तक क्या-क्या कारस्वाइयाँ कीं?

विलियम—मैंने अँग्रेजी बोलने का अच्छा अभ्यास कर लिया है।

मि० गार्डन—खूब! तो क्या आप अँग्रेजी मे प्रोपोज करेंगे, या वह तुम्हारे अँग्रेजी भाषण का प्रवाह देखकर तुम्हारे ऊपर लट्टू हो जायगी?

विलियम—मैंने गाना भी सीख लिया है।

मि० गार्डन—टेनिस भी तो प्यानो ही की तरह नहीं सीखा है?

विलियम—नहीं जी, खूब खेलता हूँ। अच्छे-अच्छों के छक्के छुड़ा दिए हैं।

मि० गार्डन—सच! अच्छा कमरे में चलकर दिखाओ तो ज़रा अपना खेल।

(दोनों कमरे में आते हैं। मिसेज़ गार्डन खूँटी पर से दोनों रैकेट उतार लेती हैं। दोनों एक-एक रैकेट लेकर आमने-सामने खड़े हो जाते हैं। विलियम गेंद सर्व करता है। मिसेज़ गार्डन गेंद को उनकी तरफ़ लौटाती है। वह गेंद की तरफ लपकता है और ज़ोर में आकर लुढ़क जाता है। फिर सम्भलकर खड़ा होता है।)

मि० गार्डन—यही आप का खेल है! तुम इसमें भी फेल हो गए। खुदा के लिये कहीं जेनी के सामने न खेलना नहीं मुझ को भद हो।

विलियम—मैं गिरा थोड़े ही था। ज़ोर से दौड़ा तो ज़रा पाँव फिसल गया।

मि० गार्डन—अच्छा टेनिस-सूट तो बनवा लिया है?

विलियम—यह तो मुझसे किसी ने बताया ही नहीं।

मि० गार्डन—अच्छा कुछ नाचना-वाचना भी सीखा है? जेनी बहुत अच्छा नाचती है।

विलियम—जी हाँ, नाचना तो मुझे पहले ही से आता है।

मि० गार्डन—अच्छा ज़रा दिखाओ।

(विलियम वहीं बन्दरों की भाँति उचकने लगता है। नाचने समय अपने स्थूल शरीर को सँभालने में उसकी मुखाकृति ऐसी विकृत हो जाती है कि मि० गार्डन हँसते-हँसते लोट जाती हैं।)

मि० गार्डन—रहने भी दो। यह आप का नाच है, जैसे बनैला सुअर किलोल करे। भई यह बेल मुँढे चढ़ने की नहीं। अभी तुममें बड़ी-बड़ी त्रुटियाँ हैं। पहले इनको दूर करो! तब हिम्मत करके एक दिन प्रोपोज़ करो।

विलियम—त्रुटियाँ तो मैं पूरी कर लूँगा, लेकिन प्रोपोज़ करना टेढ़ी खीर है।

मि० गार्डन—मैं एक बात कहूँ—ज़रा-सी शराब पी लेना।

विलियम—ऐसा न हो बहकने लगूँ?

मि० गार्डन—अजी नहीं थोड़ी-सी पीना और बढ़िया किस्म की जिससे मुँह से सुगन्ध आवे और देखो गँवारों की तरह बात-चीत न

किया करो। शिष्टाचार सीखो। पहनावा भी भले आदमियों-सा रखो। टाई और कॉलर रेशमी लो। कोट के बटन में एकाध गुलाब लगा लिया करो। यह मोटा-सोटा लेडियों के पसन्द की चीज़ नहीं। हलकी-सी सोफियानी छड़ी लो। यह तुमने डिबिया-सी घड़ी और जंजीर जो लगा रखी है, इसे धता बताओ। सुनहरी घड़ी कलाई पर बाँधो। तुम्हारे घर में कितने नौकर हैं?

विलियम—नौकर! नौकरों की क्या जरूरत है? एक बूढ़ी दाई है, वह रोटी और गोश्त पका देती है। दोनों वक्त। सुबह को दो सेर दूध खुद दुहा लाता हूँ। कच्चा ही पी जाता हूँ। बुढ़िया बिस्तर डाल देती है। और मुझे नौकर की जरूरत ही क्या है। दफ़्तर से आकर दो-ढाई सौ हाथ लेजिम के फेर लेता हूँ। खाना खाकर सो जाता हूँ।

मि० गार्डन—अगर तुम्हारा यह रहन-सहन है तो जेनी से हाथ धो रखो। वह मज़दूर पति नहीं, जेंटिलमैन पति चाहती है।

विलियम—अब तक तो मुझे किसी ने कुछ बताया ही नहीं। अब आप ने सलाह दी है, देखिए कितनी जल्द जेंटिलमैन बन जाता हूँ।

मि० गार्डन—कुछ न हो तो एक बेयरा, एक खानसामाँ और एक अर्दली तो होना ही चाहिए। बावरची अलग। एक मेहतर, एक धोबी और एक बागबान भी रखो। और कैसे मालूम होगा कि तुम साहब हो। अभी मोटर न हो, तो कोई हरज नहीं; लेकिन साल-दो-साल मे उसका प्रबंध भी करना पड़ेगा। घर में कुछ तसवीरें है ?

विलियम—जी हाँ, अखबारों में जो अच्छी तसवीर नजर आ जाती है, उसे फ्रेम करा लेता हूँ।

मि० गार्डन—शाबाश! तब तो तुम आर्ट के बड़े रसिक हो। अच्छा, कभी सिनेमा देखने जाते हो ?

विलियम—वहाँ जाकर नींद कौन खराब करे मि० गार्डन! मुझे तो उसमे कुछ मजा नहीं आता।

मि० गार्डन—तो तुम निरे गँवार हो। खाना काम करना और सोना जानते हो। सभ्यता तो जैसे तुम्हें छू नहीं गई।

(जेनी को आहट मिलती है विलियम पिछवाड़े के द्वार से बदहवास भागता है)

नसीबे वाली। मुझे उन्होंने अपनी कम्पनी में बुलाया है। पहले १०००) देंगे।

मिसेज गार्डन—(बेटी को गले लगाकर) सच!

जेनी—हाँ मामा! वह तो मुझे अपने साथ ले चलने पर ज़ोर दे रहे थे। मैंने कहा—अभी मुझे कुछ तैयारी करनी है। मुझे ५००) का चेक तैयारियों के लिये दे गये हैं।

मि० गार्डन—खुदा का लाख-लाख शुक्र है, कि उसने आड़े वक्त में हमारी मदद की। बड़ा शरीफ़ आदमी मालूम होता है।

जेनी—(कुछ शरमाते हुए) अगर उमा मेरी सहेली न होती और मुझसे इतना प्रेम न करती होती तो एक बार मैं अपने भाग्य की परीक्षा करती।

मि० गार्ड—क्या कहती है जेनी! विवाहित पुरुष के साथ?

जेनी—शादी विवाह [illegible] का खेल है मामा! यह केवल स्त्री और पुरुष के मन का समझौता है, इसमें [illegible] का दखल देना [illegible] है। मैं रूपवती [illegible] नहीं, लेकिन इतनी मैं जितना आकर्षित कर सकती हूँ उतना नहीं कर सकती। [illegible] इतने से [illegible]

लेडी डा०—आज तो आप की तबीयत अच्छी मालूम होती है।

उमा—होगी ! मुझे तो कोई फर्क नहीं मालूम होता।

लेडी०—रात को नींद आई थी ?

उमा—जी नहीं। पलक तक नहीं झपकी।

लेडी०—मैंने तो आप से पहले ही कहा था, कुछ दिनो के लिये पहाड़ पर चली जाइये। आप राजी न हुईं। कम-से-कम सुबह को हवा खाने तो चली जाया करो।

उमा—इच्छा ही नहीं होती मेम साहब ! सोचती हूँ, जब मरना ही है, तो क्या छः महीने पहले और क्या छः महीने पीछे।

लेडी०—नही-नही तुम बहुत जल्द अच्छी हो जाओगी उमा देवी ! अगर तुम पहाड़ पर चली जाओ तो एक महीने मे चंगी हो जाओगी। मै आज बाबूजी से कहती हूँ तुम्हे कल ही भेज दे।

उमा—आप मुझे अकेले जाने को कहती हैं। मै अकेली नहीं रह सकती।

लेडी०—नही अब मै अकेली जाने को न कहूँगी। बाबूजी तुम्हारे साथ जायेंगे।

साल-भर के लिये उन्हें मैके भेज देना चाहिये था। इनसे पृथक रहना जरूरी था; पर आपने जरा भी परवाह न की। जिस वक्त उमा-देवी आई थीं, मैंने उन्हें देखा था। खिले हुए गुलाब का-सा चेहरा था। एक साल के अन्दर उनकी यह दशा हो गई, कि देह में रुधिर का नाम नहीं। इसके जिम्मेदार आप हैं।

योगराज—लेडी विलसन, ईश्वर के लिये मुझे क्षमा कीजिये। मैं आपसे कसम खाकर कहता हूँ, कि मुझे कुछ न मालूम था।

लेडी डा०—तो यह किसका दोष है? अगर कोई आदमी तैरना न जानने पर भी दरिया में कूदे तो यह किसका दोष है? जिसने घोड़े पर सवारी करना न सीखा हो उसे क्या अधिकार है कि वह घोड़े को दौड़ावे? उमा-देवी बालिका थीं। अपने कर्तव्य का उसे ज्ञान न था। इस विषय में न उसने कुछ पढ़ा न किसी से बात-चीत की। वह तो इतना ही जानती थी कि आप उसके स्वामी हैं आपकी इच्छाओं के आगे सिर झुकाना उसका कर्तव्य है। उसे क्या मालूम था कि वह आपकी कामुकता के सामने सिर झुकाकर अपने लिये विष

जायँगे। वह बेचारी पति को प्रसन्न रखने के लिये सब कुछ झेलने को तैयार रहती है। सभी घरों में यही तमाशा देखती हूँ। अगर क्षय रोग न फैले, तो क्या हो; लेकिन अब भी घबराने की कोई बात नहीं। कल आप इन्हें पहाड़ पर ले जाइये और पूरा विश्राम दीजिये। नहीं तो आप को पछताना पड़ेगा।

(लेडी विल्सन चली जाती है। योगराज फिर उमा के पास आता है।)

उमा—क्या कहती थीं लेडी विलसन? तुम से अलग क्या बातें कर रही थीं?

योगराज—कुछ नहीं, वही पहाड़ पर जाने की बात-चीत थी। मैंने निश्चय किया है, कल हम लोग चल दें।

उमा—तो मेरे घर एक ख़त लिख दो। अम्मा और दादा से मुलाक़ात तो करलूँ। जेनी से भी मिलने को जी चाहता है। उसे भी एक ख़त लिख दो।

योगराज—इसमें कई दिन लग जायँगे उमा!

उमा—जैसी तुम्हारी इच्छा। कहीं मर गई, तो उन लोगों को देख भी न सकूँगी!

सो रही है। आपको भी चाहे अभी कुछ न मालूम होता हो, पर जल्द या देर में इसका असर अवश्य होगा। प्रकृति उन लोगों को कभी क्षमा नहीं करती, जो उसके नियमों को तोड़ते हैं।

(योगराज निश्चल बैठा रहता है, मानों निष्प्राण हो। जब लेडी विलसन टोपी उठा कर जाने लगती है, तो वह चौंक कर खड़ा हो जाता है।)

योगराज—लेडी विलसन, ईश्वर के लिये इन्हें किसी तरह बचा लीजिये। मैं उम्र-भर आपकी गुलामी करूँगा। आप मुझसे मेरा सब कुछ ले लें, केवल इन्हें बचा लें, मुझ पर दया कीजिये।

डाक्टर—लाला योगराज, ऐसी बातें न कहो। बचाना मेरे वश की बात नहीं है। मैं यथाशक्ति यत्न करूँगा, यह मेरा धर्म है। इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कर सकता। आपने भी बड़ी नादानी की, जो आपके [illegible] [illegible] किया [illegible]। [illegible] लिए [illegible] [illegible] है। [illegible] अत्याचार [illegible] है। [illegible] और [illegible]

लेकिन नहीं। फूलों को न तोड़ना। ([illegible]) अपनी डालियों पर कितने सुन्दर लगते हैं। तोड़ने से मुरझा जायँगे।

(चम्पा को बुलाती है, वह आकर साड़ी दे जाती है।)

देख चम्पा, ज़रा मेरी वह साड़ी निकाल ला, जो कई महीने हुए कश्मीर से मँगवाई थी। एक बार भी नहीं पहन सकी। आज उसे पहनूँगी, देख और कपड़ों की तह न बिगड़े। साड़ी में थोड़ा अगर मल देना। आज इनसे इनाम लूँगी।

(चम्पा चली जाती है।)

बतलाओ आज मुझे क्या सौगात दोगे? कोई अच्छी-सी चीज़ देना।

योगराज—([illegible] स्वर से) क्या लोगी उमा? मेरे पास जो कुछ है वह तुम्हारा है।

उमा—([illegible] हाथ रख देती है) जी नहीं इन बातों में मैं नहीं आती। मैं जो कुछ मागूँगा वह तुम्हें देना होगा।

योगराज—तुम्हारे लिये मेरी जान हाज़िर है उमा!

उमा—मै तुमसे एक वचन माँगती हूँ।

योगराज—यह तो तुमने कुछ न माँगा।

चौथा दृश्य

(जेनी का मकान, सन्ध्या का समय, विलियम टेनिस सूट पहने, मूछें मुंडाये, एक रैकेट हाथ में लिये, नशे में चूर आता है।)

जेनी—आज तो तुमने नया रूप भरा है विलियम ! यह किस गधे ने तुमसे कहा कि मूछे मुंड़ा लो ! बिलकुल हीजड़ों से लगते हो। अपने सिर की कसम। यह तुम्हें क्या सनक सवार हुई। अच्छी खासी मूछे थी, मुँडाकर सफाया कर दिया। जरा जाकर आईने में अपनी

चाहूँ हँसू-बोलूँ, जहाँ चाहूँ जाऊँ-आऊँ, जिससे चाहूँ प्रेम करूँ। बोलो मानते हो?

विलियम—यह कैसे मुमकिन है जेनी! तुम हँसी करती हो। उस वक्त अगर कोई मर्द तुम्हारी तरफ आँखें भी उठाये, तो उसका खून पी जाऊँ, खोद कर जमीन में गाड़ दूँ, जीता निगल जाऊँ!

जेनी—तो फिर हमारी-तुम्हारी विधि नहीं मिलती।

विलियम—देखो जेनी, मेरी अभिलाषाओं का खून न करो। मेरी जिन्दगी बरबाद हो जायगी।

जेनी—अच्छा बस, अब हँसी हो चुकी विलियम! तुमने कभी सोचा है, तुम क्यों शादी करना चाहते हो?

विलियम—([illegible] हंसकर) आखिर और सब लोग क्यों शादी करते हैं?

जेनी—और सब लोग झख मारते हैं। मैं तुमसे पूछती हूँ, तुम क्यों शादी करना चाहते हो?

(विलियम सिर खुजलाता है और बगलें झाँकता है।)

जेनी—तुम्हें नहीं मालूम। अच्छा मुझसे

सुनो। तुम केवल इसलिये विवाह करना चाहते हो, कि तुम्हारा चित्त प्रसन्न करने के लिये तुम्हारे घर में एक खिलौना आजाय।

विलियम—बस-बस यही बात है जेनी! तुम कितनी बुद्धिमती हो।

जेनी—तुम इसलिये विवाह करना चाहते हो कि जब मैं बढ़िया, सूफ़ियाना साड़ी पहन कर तुम्हारी मोटर साइकिल पर तुम्हारे साथ निकलूं, तो लोग हँस-हँसकर कहें वह जा रहा है भाग्य का धनी विलियम!

विलियम—बस-बस यही बात है जेनी! सचमुच तुम बड़ी बुद्धिमती हो।

जेनी—इसलिये कि जब तुम अपने अफ़सरों की दावत करो, तो मैं उनसे मीठी-मीठी बातें करके उनका दिल खुश करूँ और अफ़सर खुश होकर तुम्हारी तरक्की करें।

विलियम—बस-बस यही बात है जेनी!

जेनी—इसलिये कि तुम्हारे बच्चे हो जायँ और तुमने जो थोड़ी-सी चाँदी जमा कर रखी है, उसके वारिस पैदा हो जायँ।

विलियम—बस-बस जेनी। सुभान अल्लाह!

जेनी—तो मैंने इसके लिये एक बहुत अच्छी औरत तलाश कर रखी है। वह मुझसे कहीं अच्छी बीवी होगी तुम्हारी। तुम जैसे रखोगे वैसे रहेगी, जो चाहोगे वह करेगी, तुम्हारे घर में झाड़ू लगाएगी, तुम्हारा खाना पकाएगी, तुम्हारा बिस्तर लगाएगी।

विलियम—(प्रसन्न होकर) वह कौन है जेनी !

जेनी—मेरी मेहतरानी। गोरी, हँस-मुख, चंचल, बाँकी औरत है।

विलियम—तुम मेरा अपमान कर रही हो जेनी ! मैं मेहतरानी से विवाह करूँगा ? मैं भी खानदान का शरीफ हूँ।

जेनी—अच्छा ! तो तुम ऐसी बीवी चाहते हो जिससे तुम्हारे खानदान की इज्जत में बट्टा न लगे ?

विलियम—और क्या !

जेनी—तो तुम अभी शादी का अर्थ नहीं समझे।

विलियम—तो क्या मैं नालायक हूँ ? मेरे पास एम० एम० सर्टिफिकेट है कि देखो तो दंग रह जाओ

जेनी—अच्छा ! यह नई बात सुनी ।

विलियम—मैं जो जरा चुपचाप रहता हूँ, तो तुमने समझ लिया बस यूँ ही है । मैं अपने मुँह अपनी तारीफ नहीं करना चाहता । इसे मैं ओछापन समझता हूँ ; लेकिन जब ऐसा अवसर आ पड़ा है, तो मुझे उन सनदों को पेश करना पड़ेगा । देखो । (जेब से कई चिट्ठियों का पुलिंदा निकालकर) यह मिसेज डगलस का खत है । उन्होंने मेरे टेनिस खेलने की तारीफ की है ।

(जेनी खत पढ़ती है—It is hereby certified that Doby William handles his tennis ball just as a skilful wife handles her husband and consequently he should not be disqualified in a matrimonial game on this account)

जेनी—इस सनद ने तो मेरी जबान बन्द कर दी । तुम्हारे पेट में ऐसे-ऐसे गुण भरे है !

विलियम—जी हाँ, और आप क्या समझती हैं । देखती जाइए । यह मिस डासन का खत है ।

(जेनी दूसरा खत पढ़ती है—It is hereby certfied that Doby William has invented an altogether new dance, never heard of before, and no body else can compete him there It is on extra qualification in his favour for a matiimonial job.)

जेनी—तुमने ऐसे-ऐसे लाजवाब सर्टिफिकेट छिपा रखे हैं ! तुम तो छिपे रुस्तम निकले।

विलियम—देखती जाइए। इस चिट्ठी में हेडमास्टर साहब ने मेरे चाल-चलन की प्रशंसा की है। और यह सनद दिखाना तो मैं भूल ही गया। यह हिज हाइनेस गवर्नर ने मेरे फादर को दिया था। मुझे कोई मामूली आदमी न समझिए।

([illegible])

मिस ब्राउन—मैंने कहा चलो विलियम का तमाशा [illegible] आईं [illegible] प्रपोज़ करने आया था [illegible] कि मुझे एक [illegible]

[illegible]

दीजिए। रैकेट पकड़ने का तो शऊर नहीं। भला मैं क्या लिखती।

मिस डासन—क्या हुआ, उसने प्रोपोज किया? ज़रा उसका किस्सा कहो।

मिसेज़ डगलस—यही सुनने के लिये तो भागी आ रही हूँ।

जेनी—तुम्हें देखते ही भाग खड़ा हुआ। मगर तुमने बड़े मज़े का सर्टिफिकेट दिया। फूला न समाता था। जेब मे लिए फिरता है।

दोनों लेडियाँ—क्या—क्या! हमने कब कोई चिट्ठी दी!

जेनी—दिखाता तो था!

मिस डासन—तो कमबख्त ने अपने हाथ से लिख ली होगी। जभी भागा। कहाँ हैं दोनों चिट्ठियाँ?

जेनी—चिट्ठियाँ तो लेता गया, पर उसका मजमून मुझे याद है। हज़रत ने अपनी दानिस्त मे अपनी तारीफ लिखी थी।

(जेनी एक कागज पर दोनों खतों को याद से लिखती है, और दोनों हँसते हँसते लोट जाती है।)

[परदा]

चलूँ ; अगर जानती यह आफ़त आने वाली है, तो तुरन्त भागती। देखने भी न पाई !

योगराज—आपका नाम अन्त समय तक उनकी ज़बान पर था। बार-बार आपको पूछती थीं। (लंबा साँस खींचकर) मैं तो कहीं का न रहा मिस जेनी ! मुझे जीवन में वह विभूति मिल गई थी, कि उसे खोकर अब संसार मेरी आँखों में सूना हो गया। और यह सब मेरे ही कर्मों का फल है। मैं ही उनका घातक हूँ। मेरी ही भोग-लिप्सा ने उस कच्चे फल को तोड़ कर ज़मीन पर गिरा दिया ! उन्हें दो बार गर्भ-पात हुआ ; पर मेरी अन्धी आँखों को कुछ न सूझता था। जिस फूल को सिर और आँखों और हृदय से लगाना चाहिये था, जिसकी सुगन्ध से मुझे अपने जीवन को बसाना चाहिए था, उसे मैंने पैरों से कुचला। कभी-कभी जी में ऐसा उबाल आता है, कि दीवार से सिर पटक दूँ ! यह दाग दिल से कभी न मिटेगा, यह घाव कभी न भरेगा !

(रोता है।)

जेनी—यों अधीर होने से कैसे काम चलेगा बाबूजी ! मैं तो उसकी सहेली थी, लेकिन

हुई दिखाई देती थी। दिन-दिन दुर्बल होती जाती थीं; लेकिन मेरी खातिरदारी में अणु-मात्र भी कमी न करती थीं। इस घर की एक-एक वस्तु पर उनका प्रेम अंकित है। वह खुद फूलों की तरह कोमल थीं और फूलों से उन्हें असीम प्रेम था। यह गमले जो सामने रक्खे हुए हैं, उन्हीं के लगाये हुए हैं। खाने की जिस वस्तु में मेरी रुचि देखतीं, उसे अपने हाथों से पकातीं। कुरसियों पर जो यह फूलदार गद्दे हैं, उन्हींके काढ़े हुए हैं। मेज़ पर जो मेज़पोश है, उन्हीं का काढ़ा हुआ है। तकियों के गिलाफ़ उन्हींके बनाये हुए हैं। किस-किस बात को रोऊँ! उन्होंने अपने को मुझपर अर्पित कर दिया। मुझ जैसा अनाचारी, व्यसनी, अधम व्यक्ति इस योग्य न था कि उसे ऐसी देवी मिलती। ईश्वर ने सुअर के गले में मोतियों की माला डाल दी।

(वह चुप हो जाता है और कई मिनिट तक आँखें बन्द किये बैठा रहता है। सहसा सिर पर जोर से हाथ मार कर कमरे से निकलता है और बगीचे की ओर भागता है। उमा उसके पीछे पीछे जाती है। वह बगीचे में खड़ा होकर फूलों की क्यारियों की ओर ध्यान से देखता है, जैसे किसी को खोज रहा हो। फिर वहाँ से लौटता हुआ आता है और उमा के कमरे का परदा

कर सकता हूँ। खातिर करने आया तो चला गया!

(महाराज को पुकारता है।)

देखो, मिस साहब के लिये नाश्ता लाओ, बहुत जल्द और महरी को भेजो, आपका हाथ-मुँह धुलाए।

जेनी—आप ज़रा भी तकल्लुफ़ न करें बाबूजी! अभी नाश्ता करने की मेरी ज़रा भी इच्छा नहीं है। जी नहीं चाहता।

योगराज—तो फिर आप की खातिर क्या करूँ। आइये आपको उमा का कमरा दिखाऊँ। देखिये उन्होंने कैसी-कैसी साहित्य की पुस्तकें जमा कर रखी थीं। उनकी कविताएँ आप को सुनाऊँ।

(दोनों उमा के कमरे में जाते हैं, जो कालीन और गद्देदार कोचों और शीशे के सामानों से सजा हुआ है। योगराज एक आलमारी खोलता है। उसमें उमा के आभूषणों की सन्दूकची निकल आती है। योगराज तुरत उसे निकाल लेता है और उसे खोलकर एक-एक आभूषण लेकर जेनी को दिखाता है।)

योगराज—यह उनके आभूषण हैं। इन्हें पहन कर वह कितनी प्रसन्न होती थी। इनके

एक-एक अणु में उनके स्पर्श का सौरभ है। इन्होंने अपनी सुनहरी आँखों से उनके रूप की छटा देखी है। यह उनके आदर और प्रेम के पात्र रह चुके हैं। यह इस दुरवस्था में पड़े रहें, यह मैं नहीं देख सकता। उन्हें अपने आभूषणों की यह दशा देखकर स्वर्ग में भी कितना दुःख होता होगा। मैं आपके मनोभावों पर आघात नहीं करना चाहता, मिस गार्डन! क्षमा कीजिएगा; लेकिन आप इन चीजों को स्वीकार कर लें, तो उनकी आत्मा को कितनी शान्ति होगी! इनका कोई दूसरा उपयोग ऐसा नहीं है, जिससे उन्हें इतना आनन्द हो। आपको वह अपनी बहन समझती थी और इस नाते से मैं आपको इन्हें स्वीकार करने के लिये मजबूर कर सकता हूँ।

(विजयी की भाँति मुस्कराता है)

जेनी—(सजल नेत्रों से) आपने तो मेरे लिये कुछ कहने की गुँजाइश नहीं रखी बाबूजी! लेकिन मैं अपने को इस योग्य नहीं समझती आप इन्हें उनकी स्मृति-स्वरूप अपने पास सुरक्षित रखें। शायद कोई ऐसा समय आवे,

योगराज—आज मेरी आँखों से नहीं देख रहा हूँ मिस जेनी ! मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है कि उमा मेरे ऊपर तरस खाकर आकाश से उतर आई है । आपमें और उस-में इतना सादृश्य है, इसका अब तक मुझे अनुमान न था । तुम मेरी उमा हो जेनी ! तुममें उसी आत्मा का आभास है, वही रूप-माधुर्य है, वही कोमलता है । तुम वही हो, मेरी प्यारी उमा ! तुम मुझसे क्यों रूठ गई थीं ? बोलो, मैंने क्या अपराध किया था ? इस तरह कोई अपने प्रेमी से आँखें फेर लेता है ?

(वह फूट-फूटकर रोने लगता है ।)

जेनी—([illegible]) बाबूजी ! होश में आइए । यह आप की क्या दशा है !

([illegible] है ।)

[परदा]

रुपये भी वापस कर देती हैं, घर से आती भी नहीं। आख़िर चाहती क्या हैं ?

जेनी—बस यही कि मैं शादी कर लूँ और उनके पास रहूँ। शायद उन्हें यह खौफ़ भी हो, कि कहीं तुम मुझे लेकर भाग न जाओ।

योगराज—(रुककर) तुम जाओगी, तो फिर लौटकर न आने पाओगी। मेरा फिल्म अधूरा रह जायगा। जब तक ड्रामा पूरा न हो जाय, मैं तुम्हे एक दिन के लिये भी नहीं छोड़ सकता। और अब तुमसे क्यों छिपाऊँ जेनी ! छिपाना व्यर्थ है। शायद तुमने पहले ही भाँप लिया है। अब मैं तुम्हारे बगैर जिंदा नहीं रह सकता। मैंने तुम में अपनी उमा को फिर से पाया। अगर उस वक्त तुम न आ जातीं तो मालूम नहीं मेरी क्या हालत होती। शायद दीवाना हो जाता या कहीं डूब मरा होता। तुमने आकर मेरे तड़पते हुए हृदय पर मरहम रखा और मुझे जिला लिया।

जेनी—इसीलिये अब मेरा यहाँ से जाना जरूरी है। मैं जाना नहीं चाहती। शायद इतना तुम भी समझ गए होगे क्या नहीं जाना चाहती।

जेनी—(सोचकर) नहीं ; ऐसे मामलों में तर्क से काम नहीं चल सकता। मुझे जाने दो। मैं जानती हूँ, तुमसे अलग रह कर संसार मेरे लिये सूना है ; लेकिन मुझे इस विचार से संतोष होता रहेगा कि मैंने संसार के निर्दय आघातों से तुम्हारी रक्षा की।

योगराज—यह सन्तोष बहुत थोड़े दिन रहेगा जेनी! अगर तुम्हारा खयाल है कि तुम्हारे जाने के बाद मैं यह सब कुछ भूल जाऊँगा और फिर किसी रूपवती रमणी से विवाह कर के आनन्द से रहूँगा, तो वह गलत है। तुमने सोचा है, मैं अपना स्वर्ग आप बना सकता हूँ। तुमसे मुझे जो प्रेम है, उसे तुम मेरी इस शक्ति का प्रमाण समझ रही हो। वास्तव में तुम अपना मूल्य बहुत कम समझ रही हो। मैंने तुम में जो कुछ पाया, जो कुछ देखा, वह फिर कहीं और देख सकूँगा, यह असंभव है। इसका प्रमाण शायद तुम्हें जल्द मिल जाय। निस्स्वार्थ प्रेम ऐसी सस्ती चीज़ नहीं है, जो बाजार में मिलती हो।

(दोनों कुछ देर तक सिर झुकाए विचारों में डूबे बैठे रहते हैं।)

योगराज—अगर यही समाज का भय

विवाह के पीछे एक आदमी के साथ चली गई। मैं आज कल की प्रथानुसार शुद्ध होकर तुम्हें उस आलोक में रख सकती हूँ, लेकिन शुद्धि को मैं बिलकुल ढोंग समझती हूँ। मैं अपने स्वभाव से, अपने संस्कारों से, जो कुछ हूँ, वही रहूँगी। हवन करने से या दो-चार मंत्र पढ़ लेने से मेरे संस्कार नहीं बदल सकते। ईसाई-धर्म में मुझे बहुत-सी बातें खटकती हैं; पर हिन्दू-धर्म में भी ऐसी बातों की कमी नहीं। ईसाई-धर्म में कम-से-कम एक तत्व अब भी है, और वह सेवा है। हिन्दू-धर्म में तो वह चीज भी नहीं। यहाँ तो केवल रूढ़ियाँ हैं, केवल पुरानी लकीरों का पीटना है। इसके लिये मेरी आत्मा तैयार नहीं। मुझे हँसकर विदा कर दो, मगर देखना यह विच्छेद हमारे आत्मिक ऐक्य को शिथिल न कर दे। मुझसे नाराज न होना, मेरी तरफ से आँखें न फेरना। जेनी तुम्हारी है, और तुम्हारी रहेगी, संसार की आँखों में नहीं, ईश्वर की आँखों में, जो संसार की सृष्टि करता है।

योगराज—(कम्पित स्वर से) तो यह तुम्हारा अंतिम फैसला है जेनी?

प्रकाश न पाकर निर्जीव हो जाता है। मैं स्वेच्छा से यहाँ रात भर बैठी रह सकती हूँ ; लेकिन कोई यह द्वार बन्द कर दे तो मैं इसी क्षण यहाँ से निकल भागने के लिये विकल हो जाऊँगी।

योगराज—मैं तो इसके लिये तैयार हूँ जेनी !

जेनी—लेकिन मैं जो तुम्हें काँटों में नहीं उलझाना चाहती। समाज में तुम्हारा जो स्थान है उसकी रक्षा करना भी मेरे प्रेम का अंग हो गया है। यह मेरे जीवन का नया अनुभव है। मुझे विश्वास है तुम अपने ऊपर इस निन्दा और अपमान का कोई असर न होने दोगे, लेकिन मनुष्य तो प्रकृति के नियमों में जकड़ा हुआ है। उससे तुम कैसे बच सकते हो। इस ग्लानि और संकट के वातावरण में तुम बहुत दिन अपने को न सँभाल सकोगे। मैं तुम्हारे ऊपर सन्देह नहीं कर रही हूँ, लेकिन टाल्सटाय की अन्नाकेनिना का अन्त मेरी आँखों के सामने फिरा करता है। मैं उसे भूलना चाहती हूँ पर असफल होती हूँ।

योगराज—(निराश होकर) तुम्हारी जैसी इच्छा हो जेनी ! मैं तुम्हें मजबूर नहीं कर

सातवाँ दृश्य

(जेनी का मकान । मिसेज़ गार्डन मुरगियों को दाना चुगा रही है ।)

विलियम—मिस गार्डन का कोई पत्र आया था ?

मि० गार्डन—हाँ वह खुद दो-एक दिन में आ रही है ।

विलियम—मैं तो उसकी ओर से अब निराश हो गया हूँ मिसेज़ गार्डन ! मैं जो कुछ

हूँ, वही रहूँगा। मैंने सब कुछ करके देख लिया। वह मेरे बस की नहीं। फिर अब वह खुद एक हजार महीना कमाती है। मेरे तीन सौ उसकी नज़रों में क्या जचेंगे। अब तो वह मुझसे विवाह भी करना चाहे तो न करूँ।

मि० गार्डन—सच! आखिर क्यों उससे नाराज़ हो गए? उसके एक हजार के साथ तुम्हारे तीन सौ मिलकर तेरह सौ न हो जायँगे। इतना हिसाब भी नहीं जानते?

विलियम—लेकिन घर में मेरा पोजीशन क्या होगा, इसका भी आप खयाल करती हैं? मैं अपनी बीबी की नज़रों में गिरना नहीं चाहता। आखिर वह किसलिये मेरा दबाव मानेगी, मेरा लिहाज़ करेगी। सब लोग यही कहेंगे कि अपनी बीबी की रोटियाँ खाता है, बीबी की कमाई पर शान जमाता है।

मिसेज़ गार्डन— [illegible] तो इसमें क्या बुराई है? औरत अपने मर्द की कमाई खाती है, उसपर शान जमाती है, तब तो उसे ज़रा भी शर्म नहीं आती।

विलियम—अब मैं आपको कैसे समझाऊँ। मर्द मर्द है, औरत औरत है।

मि० गार्डन—अच्छा ! आज मुझे यह नई बात मालूम हुई। मैं तो समझती थी, मर्द औरत है, औरत मर्द है।

विलियम—आप तो मज़ाक करती हैं। मेरे दिल में जो भाव है उसे प्रकट करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं। मर्द चाहता है कि स्त्री उसका मुँह ताके, जिस चीज़ की ज़रूरत हो उससे कहे, उसका अदब और लिहाज़ करे। इसीलिये वह रात-दिन जी तोड़कर परिश्रम करता है, दग़ा-फ़रेब, छल-कपट, सब कुछ केवल इसीलिये करता है कि स्त्री की निगाहों में उसकी साख हो। उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा यही होती है कि स्त्री को ज़्यादा-से-ज़्यादा खातिर कर सके, ज़्यादा-से-ज़्यादा आराम दे सके। वह स्त्री ही के लिये जीता है और स्त्री ही के लिये मरता है। वह उसपर न्योछावर हो जाना चाहता है। लेकिन जब स्त्री खुद पुरुष से ज़्यादा कमाती हो तो उसकी नज़र में पुरुष का क्या महत्त्व होगा ?

मिसेज़ गार्डन—अच्छा, तुम्हारा यह मतलब है ! लेकिन मैंने तो देखा है कि अकसर पुरुषों को मालदार स्त्रियों की तलाश रहती है।

विलियम—ऐसे पुरुष बेहया हैं मिसेज़ गार्डन! मैं उन्हें निर्लज्ज समझता हूँ। वह हमेशा स्त्री के मोहताज रहते है, उसकी खुशामद करते हैं, उसके इशारों पर चलते हैं। स्त्री उनपर शासन करती है, उनके कान पकड़कर जिस तरह चाहती है उठाती और बैठाती है। मैं तो यह ज़िल्लत नहीं सह सकता।

मि० गार्डन—मैंने तो ऐसे मर्द भी देखे हैं, जो स्त्री के धन पर मज़े उड़ाते हैं और उस पर रोब भी जमाते हैं।

विलियम—उन लोगों को मैं भाग्यवान समझता हूँ। मैं अपना शुमार उन भाग्यवानों में नहीं कर सकता। उनमें कुल-प्रतिष्ठा होगी, रूप-आकर्षण होगा विद्या-गौरव होगा। मुझ में तो इनमें से एक गुण भी नहीं। मैं तो सीधा-सादा ग़रीब मज़दूर हूँ। मेरी हिमाकत थी कि मैंने जेनी का राग पाला। वास्तव में मैं उसके योग्य नहीं हूँ।

मि० गार्डन—इसीलिये कि वह तुमसे ज़्यादा कमाती है?

विलियम—हाँ प्यारी मिसेज़ गार्डन! मैंने अपनी गलती मालूम कर ली। इस बा[illegible] में

मैंने एक बात और मालूम कर ली। देखिये मेरी हँसी न उड़ाइयेगा। मुझे मालूम हुआ है कि जीवन में मुझे ऐसी सहचरी की ज़रूरत है, जो मुझसे ज़्यादा अनुभव, ज़्यादा बुद्धि, ज़्यादा धैर्य रखती हो, जो अपने सलाहों से मेरी सहायता करती रहे, जिस पर मैं विश्वास कर सकूँ। मैं तुममें ये सभी गुण पाता हूँ। (ज़मीन पर घुटने टेकता है) मैं आपसे प्रोपोज़ करता हूँ, मिसेज़ गार्डन! देखिये खुदा के लिये इंकार न कीजियेगा। मुझे अब ज्ञात हुआ कि जीवन के आनन्द के लिये रूप और यौवन की इतनी ज़रूरत नहीं है, जितनी अनुभव और सेवाभाव की। रूपवती युवती मुझमें हज़ारों त्रुटियाँ पायेगी। वह अपने साथ सन्देह और ईर्षा लाती है। मुझे उसकी जासूसी करनी पड़ेगी। वह किससे बोलती है किससे हँसती है कहाँ जाती है मुझे उसकी एक-एक गति पर निगाह रखनी पड़ेगी। यह झंझट मेरे मान का नहीं। आपके ऊपर मैं पूर्ण विश्वास कर सकता हूँ। आप मुझसे कपट नहीं कर सकतीं।

मि० गार्डन—(मुस्कराकर) भला सोचो तो विलियम, दुनिया क्या कहेगी कि इस

औरत को बुढ़ापे में यह हवस पैदा हुई है। यही करना था तो आज से तीन साल पहले क्यों न किया। तब तो मैं इतनी बुढ़ी न थी। तब शायद तुम्हें कुछ अधिक संतुष्ट कर सकती।

विलियम—इसका तो मुझे भी खेद है।

मि० गार्डेन—अच्छा बतलाओ मुझ पर रोब तो न जमाओगे ?

विलियम—नहीं, खुदा की कसम। मैं आपके हुक्म के बग़ैर एक पग भी न चलूँगा।

(मिसेज़ गार्डेन विलियम को छाती से लगाती हैं।)

मि० गार्डेन—मैं तुम्हारी ओर से बहुत आशङ्कित थी विलियम कि कहीं तुम किसी माया-विनी के जाल में फँस न जाओ। तुम इतने सरल इतने निष्कपट इतने भोले-भाले हो कि मुझे तुम्हारी ओर से बराबर यही खटका लगा रहता था। इसीलिये मैं तुम्हें जेनी से मिलाती रहती थी। जेनी में और चाहे कितनी ही बुराइयाँ हों चंचलता नहीं है। तुम्हें याद है प्यारे विलियम मेरी तुमने पहले तुम

पार्क में हुई थी। मैं गिरजे से लौट रही थी। उसी दिन तुमने मेरे हृदय में स्थान पा लिया था। मेरे दिल ने उसी दिन कहा था, कि यह चिड़िया एक दिन तेरे पिंजरे में आवेगी। आज वह सौभाग्य मुझे प्राप्त हो गया। चलो हम दोनों गिरजा में खुदा का शुक्र करें।

[परदा]

आठवाँ दृश्य

(जेनी का विशाल भवन। जेनी एक सायेदार वृक्ष के नीचे एक चेयर पर विचार-मग्न बैठी है।)

जेनी—(स्वगत) मन को विद्वानों ने हमेशा चंचल कहा है। लेकिन मैं देखती हूँ कि इससे ज्यादा स्थिर वस्तु संसार में न होगी। कितना प्रयत्न किया कि रञ्जन को भूल जाऊँ; लेकिन जितना ही उससे दूर भागती हूँ उतना फंदा और कठोर होता है। महीनों से प्यानो पर नहीं

बैठी। दिल जैसे मर गया है। वही सूरत आँखों में फिरती है, वही बातें कानों में गूँजती हैं। यहीं रञ्जन से रूपवान पुरुष पड़े हुए हैं, उनसे कहीं विद्वान ; पर किसी से बोलने को इच्छा नहीं होती। मैं जानती हूँ, मैं ज़रा भी हिम्मत दिलाऊँ तो वे मुझपर प्राण देने लगेंगे। कितने आसक्त, लुब्ध नेत्रों से मेरी ओर देखते हैं। किसी से दो-एक बात कर लेती हूँ तो कितने निहाल हो जाते हैं ; पर उस देवता के सामने ये सब खिलौने हैं। खिलौनों में रंग है, रूप है, कला है, उस देवता से कहीं ज़्यादा ; पर कुछ बात है जो देवता में श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न करती है, खिलौनों के प्रति केवल विनोद का भाव। वह क्या बात है ? प्यारे रञ्जन ! तुमने मुझपर क्या जादू कर दिया ?

(मिसेज़ विलियम आती है।)

मिसेज़ विलियम—तू यहाँ कब तक बैठी है। जेनी ! अब तो शबनम पड़ने लगी ?

जेनी—कमरे में तो मेरा दम घुटता है अम्माँ !

मि० विलियम—मैंने बहुत अच्छा पुडिंग

बनाया है। चल थोड़ा-सा खा ले। तूने दिन-भर कुछ नहीं लिया। ज़रा आईने में अपनी सूरत देख। जैसे छः महीने की रोगिनी हो।

जेनी—मेरी अभी कुछ खाने की इच्छा नहीं है मामा! क्षमा करो। इधर कई दिन से रज्जन का कोई ख़त नहीं आया। मेरा दिल धड़क रहा है। कहीं दुशमनों की तबीयत ख़राब न हो।

मि० विलियम—जब तेरी तबीयत का यह हाल है तो क्यों रज्जन से विवाह नहीं कर लेती? वह बेचारा हर तरह राज़ी है. पर तुझे न जाने क्या ख़ब्त हो गया है। ख़ुद भी मरती है और उस बेचारे को भी रुलाती है। जब वह धर्म की और संम्बन्धियों की परवाह नहीं करता तो उससे क्यों नहीं कहती–प्रभु मसीह पर ईमान लाए। प्रेम का उद्देश्य जीवन का सुख है. या सारी उम्र रोते रहना?

जेनी—यही तो मैं भी सोचती हूँ मामा! क्या हरज था अगर मैं अपनी शुद्धि करा लेती। मुझमें तो कोई तब्दीली हो न जाती. हाँ उनके समाज को सन्तोष हो जाता। अगर मैं जानती उनका हृदय इतना कोमल है तो

बैठी। दिल उसी पर गया है। वही सूरत आँखों में फिरती है, वही बातें कानों में गूँजती हैं। यहाँ रज्जन से रूपवान युवक पड़े हुए हैं, उनसे कहीं विद्वान; पर किसी से बोलने की इच्छा नहीं होती। मैं जानती हूँ, मैं जरा भी हिम्मत दिलाऊँ तो वे मुझपर प्राण देने लगेंगे। कितने आसक्त, लुब्ध नेत्रों से मेरी ओर देखते हैं। किसी से दो-एक बात कर लेती हूँ तो कितने निहाल हो जाते हैं; पर उस देवता के सामने ये सब खिलौने हैं। खिलौनों में रंग है, रूप है, कला है, उस देवता से कहीं ज्यादा, पर कुछ बात है जो देवता में श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न करती है, खिलौनों के प्रति केवल विनोद का भाव। यह क्या बात है? प्यारे रज्जन! तुमने मुझपर क्या जादू कर दिया?

(मिसेज विलियम आती है।)

मिसेज विलियम—तू यहाँ कब तक बैठी रहेगी जेनी! अब तो शबनम पड़ने लगी?

जेनी—कमरे में तो मेरा दम घुटता है अम्माँ!

मि० विलियम—मैंने बहुत अच्छा पॉडग

ठीका लिया था धर्म ने ; लेकिन वह स्वयं भेद का कारण बन गया, ऐसे भेद का, जो सब भेदों से कठोर है। मैं तुमारी लड़की हूँ, मुझे तुमने अपने प्राणों का रक्त पिलाकर पाला है। मैं जानती हूँ, तुम्हें संसार में मुझसे प्यारी कोई वस्तु नहीं है ; लेकिन आज मैं गिरजे में न जाकर मसजिद में प्रार्थना करने जाऊँ तो तुम मेरी सूरत से नफरत करोगी। सभव है, अपने हाथों से मेरी हत्या कर डालो। मैं भी वही हूँ, तुम भी वही हो, फिर यह द्वेष कहाँ से आ गया। मैं कहती हूँ यह धर्म का प्रसाद है जिसने हमारे मन को सकीर्ण बना डाला है।

मिसेज़ गार्डन—तू मुझे इतनी धर्मांध समझती है बेटी ! मुझे अफसोस जरूर होगा, मैं खुदा से तेरी मुक्ति के लिये दुआ करूँगी, लेकिन तेरा अहित नहीं कर सकती, कभी नहीं।

(जेनी माँ के गले लिपटकर उसका चुम्बन लेती है)

जेनी—मामा, खुदा तुझे जन्नत में जगह दे, तुमने मेरे हृदय का बोझ उतार दिया। अब मुझे कोई शका नही, कोई बाधा नही। आज मै इन सारे ढकोसलो को, इन सारे बना-

बैठी। दिल जैसे मर गया है। वही सूरत आँखों में फिरती है, वही बातें कानों में गूँजती हैं। यही रञ्जन से रूपवान पुरुष पड़े हुए हैं, उनसे कहीं विद्वान; पर किसी से बोलने की इच्छा नहीं होती। मैं जानती हूँ, मैं जरा भी हिम्मत दिलाऊँ तो वे मुझपर प्राण देने लगेंगे। कितने आसक्त, लुब्ध नेत्रों से मेरी ओर देखते हैं। किसी से दो-एक बात कर लेती हूँ तो कितने निहाल हो जाते हैं; पर उस देवता के सामने ये सब खिलौने हैं। खिलौनों में रंग है, रूप है, कला है, उस देवता से कहीं ज्यादा, पर कुछ बात है जो देवता में श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न करती है, खिलौनों के प्रति केवल विनोद का भाव। वह क्या बात है? प्यारे रञ्जन! तुमने मुझपर क्या जादू कर दिया?

(मिसेज विलियम आती है।)

मिसेज विलियम—तू यहाँ कब तक बैठी रहेगी जेनी! अब तो शबनम पड़ने लगी?

जेनी—कमरे में तो मेरा दम घुटता है अम्माँ!

मि० विलियम—मैंने बहुत अच्छा पादरी

हीं याद आ गया! उनके कुल-मर्याद और धर्म की रक्षा करने के लिए। अपने धर्म की रक्षा करने लिए! सोचो इस अनर्थ को! जिसके चरणों पर अपने प्राणों को अर्पित कर देना मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा थी, उसे मैंने इन्हीं हाथों से क़त्ल कर दिया। मैंने नहीं, मेरे धर्म ने कत्ल कर दिया। धर्म ने भी नहीं, मेरे अभिमान ने कत्ल किया। लोगों ने यह तरह-तरह के मत बनाकर संसार में कितना विष बोया है, कितनी आग लगाई है, कितना द्वेष फैलाया है। क्या धर्म इसीलिए आया है कि आदमियों की अलग-अलग टोलियाँ बनाकर उनमें भेद-भाव भर दे? ऐसा धर्म लुटेरों का हो सकता है, स्वार्थियों का हो सकता है, मूर्खों का हो सकता है। ईश्वर का नहीं हो सकता।

मिसेज़ गार्टन—बेटा धर्म खुदा ने न भेजा होता तो दुनिया अब तक तबाह हो गई होती। आदमी-आदमी को खा गया होता। आखिर तो खुदा का बताने वाला है।

लैली—खुदा के तो सभी बताने वाले हैं लेकिन उन पाक बातों ने संसार का क्या

नमस्कार किया, इस्लाम की ईसाइयत को कितना सुधारा ? आज दोनों जिस तरह आदमियों का खून बहा रहे हैं, उसी तरह, उससे ज्यादा बेरहमी से, आदमियों का खून बहाया है। दोनों कम से कम इतनी निर्दय, इतनी कठोर नहीं होतीं। लेकिन दोनों यही कर रही हैं जिसकी उससे आशा थी, धर्म तो प्रेम का सन्देश लेकर आता है और कहता है आदमियों को मिलाना। यह मनुष्य के बीच ऐसी दीवार खड़ी कर देता है जिसे पार नहीं किया जा सकता। आखिर सम्पूर्ण जगत की एक ही आत्मा तो है। धर्म का यह भेद क्या आत्मा की एकता को मिटा सकता है ? वह खुदा जो एक-एक अणु में मौजूद है, उसे हम गिरजे और मसजिद और मन्दिर में बन्द कर देते हैं और एक दूसरे को काफिर और म्लेच्छ कहते हैं। पूछो, उस विश्वात्मा को तुम्हारे इन झगड़ों से क्या मतलब ? उसे इसकी क्या परवा कि तुम गिरजे में जाते हो या मसजिद में। वह तो केवल इतना देखता है, कि तुम प्रेम से रहते हो या नहीं। उसके मुक्त प्रवाह में जो कोई भी मेंड़ें बाँधेगा, वह प्रकृति के नियम को